पाठ्यपुस्तक : क्षितिज भाग 2 (काव्य खंड)

पद (सूरदास)

पाठ का परिचय

सूरसागर का एक महत्त्वपूर्ण प्रसंग है–भ्रमरगीत। उसी प्रसंग से पाठ में संकलित चारों पद ग्रहण किए गए हैं। कृष्ण जब गोकुल से मथुरा आ गए और वापस नहीं जा सके तो उन्होंने उद्धव को गोपियों को समझाने के लिए उनके पास भेजा। उद्धव उनका संदेश लेकर गोपियों के पास आए। उन्होंने गोपियों को निर्गुण ब्रह्म की उपासना और योग का उपदेश देकर उनकी विरह-वेदना को शांत करने का प्रयास किया, किंतु गोपियाँ तो श्रीकृष्ण के सगुण रूप की उपासिका थीं; इसलिए उन्हें उद्धव का ज्ञान का उपदेश पसंद न आया। उद्धव गोपियों को ज्ञान और योग का यह शुष्क संदेश दे ही रहे थे कि तभी एक भौंरा वहाँ आकर गोपियों के चारों ओर मँडराने लगा। तब गोपियों ने उस भ्रमर के बहाने उद्धव पर खूब व्यंग्य-बाण चलाए। भ्रमर को संकेत करके कहे गए पदों के कारण ही सूरसागर का यह प्रसंग भ्रमरगीत के नाम से प्रसिद्ध है।

कविताओं का भावार्थ

1. **ऊधौ, तुम हौ········चाँटी ज्यौं पागी।।**

   भावार्थ– सूरदास जी की गोपियाँ कहती हैं कि हे उद्धव! तुम बहुत सौभाग्यशाली हो; क्योंकि तुम प्रेम के धागे में नहीं बँधे हो और उससे पूर्णतया अनासक्त हो। इतना ही नहीं, तुम्हारे मन में तो प्रेम की भावना तक नहीं है। कमल-पत्र (सरोवर के) जल में रहता है, किंतु फिर भी उस पर जल की बूँद तक नहीं ठहरती। इसी भाँति तेल से भरी गगरी को जल में डुबाने पर भी उस पर जल की एक बूँद भी नहीं ठहरती। (इसी तरह तुम भी कृष्ण-सरोवर के प्रेमजल में रहते हो, किंतु फिर भी तुम्हारे हृदय में उनकी प्रेम-भावना का कणमात्र भी नहीं है। निःसंदेह तुम नीरस और हृदयहीन हो)। तुमने प्रेम सरिता में पाँव नहीं डुबाया और न ही तुम्हारी दृष्टि (कृष्ण) सौंदर्य में डूबी है (अर्थात् न तो तुमने किसी को आकर्षित किया और न ही किसी की तरफ आकर्षित हुए)। किंतु हम इसके बिलकुल विपरीत हैं। हम तो भोली-भाली दुर्बल नारी हैं, जो कृष्ण प्रेम की मिठास में डूबकर उनसे उसी भाँति लिप्त हो गई हैं, जैसे कि चींटी गुड़ से लिपट जाती है (और वहीं प्राण तक भी दे देती है)। भाव यह है कि हम तो कृष्ण से अनन्य और अटूट प्रेम करती हैं, चाहे इसके लिए हमें अपने प्राण ही विसर्जित क्यों न करने पड़ें।

2. **मन की मन ही········मरजादा न लही।।**

   भावार्थ– गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि हे उद्धव! हमने तो सोचा था कि हमारे श्यामसुंदर शीघ्र ही हमारे पास लौट आएँगे और हम उनके साथ रास रचाकर अपने इस दुख को भूल जाएँगी, किंतु तुमने जो यह संदेश सुनाया है, उसको सुनकर तो हमारी यह लालसा हमारे मन में ही रह गई। अब हम अपने मन की व्यथा किससे जाकर कहें; क्योंकि हमसे तो अब कुछ कहते ही नहीं बनता। हमने अब तक अपने शरीर और अपने मन की समस्त व्यथाओं को इस आशा के साथ सहन किया कि अपने प्रवास की अवधि समाप्तकर श्रीकृष्ण शीघ्र ही लौट आएँगे, किंतु तुम्हारे योग के संदेश को सुनकर तो हमारी आशा का आधार ही समाप्त हो गया है, जिस कारण हम विरहिणी कृष्ण के विरह में जली जा रही हैं। हम अब तक जिस कृष्ण को अपनी रक्षा के लिए पुकार रही थीं अब तो वहीं से दुःख की धारा बहने लगी। सूरदास जी की गोपियाँ कहती हैं कि अब हम धीरज रखकर क्या करेंगी, जब किसी प्रकार की कोई मर्यादा ही नहीं रही है।

   भाव यह है कि हमें यह विश्वास था कि श्रीकृष्ण हमारे दुःखों को दूर कर देंगे, पर अब तो श्रीकृष्ण ने ही उलटा हमें योग का उपदेश भिजवाया है। अब हमारी रक्षा का सहारा कौन है? हे उद्धव! अब तो आप भी स्वयं अपनी आँखों से हमारी दीनदशा को देख चुके हैं। इस दुःख के समय में हमारे साहस की समस्त मर्यादा नष्ट हो गई है अर्थात् अब दुःख सहन करने का साहस हममें नहीं रहा।

3. **हमारैं हरि हारिल········मन चकरी।।**

   भावार्थ– गोपियाँ कहती हैं कि हे भ्रमर (उद्धव)! श्रीकृष्ण हमारे लिए हारिल पक्षी की लकड़ी (आधार) के समान हैं। जिस प्रकार हारिल पक्षी अपने पंजों में हर समय लकड़ी दबाए रहता है; अर्थात् उसका साथ नहीं छोड़ता है; उसी प्रकार नंद जी के पुत्र अर्थात् श्रीकृष्ण को हमने अपने हृदय में मन, वचन और कर्म से धारण कर लिया है। अब तो हम जागते-सोते, स्वप्न में, दिन-रात कान्हा-कान्हा की रट लगाए रहती हैं; अर्थात् अब हम हर चेतन-अचेतन अवस्था में कृष्ण-कृष्ण जपती रहती हैं और हम खेदपूर्वक (यहाँ उद्धव पर कटाक्ष है) कहती हैं कि आपकी (उद्धव की) योग की चर्चा हमें कड़वी ककड़ी के समान लगती है; अर्थात् जिस प्रकार कड़वी ककड़ी चखते ही मुँह कड़वा हो जाता है और उसे खाने की इच्छा नहीं रहती, उसी प्रकार आपका योग संबंधी पहला शब्द सुनते ही हम विरक्त हो उठती हैं, तब पूरी चर्चा सुनना तो हमारे लिए असह्य ही है। सूरदास जी कहते हैं–गोपियाँ उद्धव को और भी छकाती हुई कहती हैं कि हे उद्धव! आप तो हमारे लिए एक ऐसी बीमारी (योग) ले आए हैं, जो न तो हमने कभी देखी, न कभी सुनी और न ही यह बीमारी हमें कभी हुई। यह योगरूपी बीमारी तो आप उन्हें ही ले जाकर सौंपिए, जिनके मन चकरी के समान चलायमान् हैं। गोपियों के कहने का तात्पर्य यह है कि योग-साधना उनके लिए आवश्यक होती है, जिनका चित्त चंचल होता है। हमने तो प्रभु कृष्ण के स्मरण में पहले ही चित्त को स्थिर कर लिया है, इसलिए हमें योग-साधना की आवश्यकता ही नहीं है।

4. **हरि हैं राजनीति········न जाहिं सताए।।**

   भावार्थ– गोपियाँ व्यंग्य के स्वर में श्रीकृष्ण पर कूटनीति की विद्या सीखने का आरोप लगाकर उनकी खूब खबर लेती हैं। उद्धव ने जो बात कही है वह तो गोपियों ने समझ ली और उससे अपने प्रिय श्रीकृष्ण के सब समाचार भी प्राप्त कर लिए। उद्धव की बातों से गोपियाँ यह निष्कर्ष निकाल रही हैं कि एक तो श्रीकृष्ण पहले से ही बहुत चतुर थे, ऊपर से उन्होंने अब राजनीति के बड़े-बड़े ग्रंथ पढ़कर उनका ज्ञान प्राप्त कर लिया है। इससे उनकी बुद्धि बहुत बढ़ गई लगती है, तभी तो उन्होंने हम युवतियों को ज्ञान और योग का संदेश भेजा है। परस्पर सखियों को संबोधित करती हुई एक गोपी कहती है कि पहले लोग (पूर्वज) बड़े भले होते थे, जोकि परोपकार के लिए बड़ी दौड़-धूप करते थे, कष्ट उठाते थे। एक ये श्रीकृष्ण हैं, जिन्हें दूसरों की (गोपियों की) कोई चिंता ही नहीं। गोपियाँ श्रीकृष्ण से अब और

कुछ नहीं चाहतीं, सिर्फ़ अपने-अपने 'मन' को वापस पाना चाहती हैं, जिन्हें श्रीकृष्ण मथुरा प्रस्थान के समय चुराकर अपने साथ ले गए थे। गोपियाँ एक तर्क यह भी देती हैं कि जब श्रीकृष्ण ने अपनी प्रेम-परंपरा को ही छोड़ दिया तो अपनी नीति मनवाने का उन्हें क्या अधिकार रह जाता है; क्योंकि जो स्वयं अपनी परंपराओं, नीतियों पर नहीं चल सकता, वह दूसरों से क्या कहने योग्य रह जाता है। इस नियम से श्रीकृष्ण को ज्ञान योग का उपदेश देने का कोई अधिकार नहीं रह जाता। अंत में सूरदास जी कहते हैं कि राजधर्म की श्रेष्ठता एवं सफलता तभी मानी जा सकती है, जब प्रजा को किसी प्रकार का कष्ट न हो, उस पर अत्याचार न हो। श्रीकृष्ण अब मथुरा के राजा हो गए हैं और उन्होंने राजनीति भी बहुत पढ़ी है, फिर भी राजा के कर्तव्यों का निर्वाह वे नहीं कर रहे हैं। यदि ऐसा होता तो हमारे साथ ऐसा अन्याय नहीं करते। राजनियम अथवा राजा के कर्तव्य का उल्लेख करने से कवि की अभीष्ट व्यंजना यह है कि मथुरा प्रवासकाल में श्रीकृष्ण का सम्राट्त्व तभी सार्थक और सफल कहा जाएगा, जब उनकी प्रजा (गोपियों) का हृदय न दुखाया जाए और यह तभी हो सकता है, जब वे उन्हें आकर दर्शन दें।

शब्दार्थ

बड़भागी = भाग्यवान। **अपरस** = अलिप्त, अछूता। **तगा** = धागा। **पुरइनि पात** = कमल का पत्ता। **दागी** = दाग। **माहँ** = में। **प्रीति नदी** = प्रेम की नदी। **पाउँ** = पैर। **बोर्‌यौ** = डुबोया। **परागी** = मुग्ध होना। **अधार** = आधार। **आवन** = आगमन। **बिथा** = व्यथा। **बिरह दही** = विरह की आग में जल रही हैं। **हुतीं** = थीं। **गुहारि** = रक्षा के लिए पुकारना। **जितहिं तैं** = जहाँ से। **उत** = उधर। **धीर** = धैर्य। **मरजादा** = मर्यादा। **न लही** = नहीं रही। **जक री** = रटती रहती है। **सु** = वह। **करी** = भोगा। **मधुकर** = भौंरा। **पठाए** = भेजा। **पाइहैं** = पा लेंगी। **तिनहिं** = उनको।

भाग-1

बहुविकल्पीय प्रश्न

काव्यांशों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश– *निम्नलिखित काव्यांशों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

(1) ऊधौ, तुम हौ अति बड़भागी।
अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी।
पुरइनि पात रहत जल भीतर, ता रस देह न दागी।
ज्यौं जल माहँ तेल की गागरि, बूँद न ताकौं लागी।
प्रीति-नदी मैं पाउँ न बोर्‌यौ, दृष्टि न रूप परागी।
'सूरदास' अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी। ***(CBSE 2016)***

1. **गोपियाँ किसे भाग्यवान कह रही हैं–**
   (क) श्रीकृष्ण को (ख) उद्धव को
   (ग) स्वयं को (घ) ब्रजवासियों को।
2. **गोपियों ने उद्धव के व्यवहार की तुलना की है–**
   (क) कड़वी ककड़ी से
   (ख) कमल के फूल से
   (ग) कमल के पत्ते और तेल की गागर से
   (घ) तालाब में रहने वाले मगरमच्छ से।
3. **गोपियों की दशा किसकी भाँति हो गई हैं–**
   (क) जाल में फँसे पक्षी जैसी
   (ख) नदी में डूबती नाव जैसी
   (ग) गुड़ में चिपकी चींटी जैसी
   (घ) प्यासे हिरन जैसी।
4. **तेल की गागर की क्या विशेषता होती है–**
   (क) वह तेल से भरी होती है
   (ख) उस पर जल की एक बूँद भी नहीं टिकती
   (ग) वह बहुत भारी हो जाती है
   (घ) वह हाथ से फिसल जाती है।
5. **काव्यांश की भाषा है–**
   (क) ब्रजभाषा (ख) अवधी भाषा
   (ग) खड़ीबोली (घ) राजस्थानी।

उत्तर – **1.** (ख) **2.** (ग) **3.** (ग) **4.** (ख) **5.** (क)।

(2) मन की मन ही माँझ रही।
कहिए जाइ कौन पै ऊधौ, नाहीं परत कही।
अवधि अधार आस आवन की, तन मन बिथा सही।
अब इन जोग सँदेसनि सुनि-सुनि, बिरहिनि बिरह दही।
चाहति हुतीं गुहारि जितहिं तैं, उत तैं धार बही।
'सूरदास' अब धीर धरहिं क्यौं, मरजादा न लही।।

1. **गोपियों के मन की बात मन में ही रह गई, क्योंकि–**
   (क) वे मन की बात केवल कृष्ण को ही बता सकती थीं
   (ख) केवल उद्धव को ही बता सकती थीं
   (ग) उनकी वाक् शक्ति समाप्त हो गई थी
   (घ) उन्होंने मौन धारण कर लिया था।
2. **गोपियाँ किसके सहारे तन-मन की व्यथा सहन कर रही थीं–**
   (क) श्रीकृष्ण के वचन और आने की आशा के सहारे
   (ख) अपने मनोबल के सहारे
   (ग) अपने तपोबल के सहारे
   (घ) योग संदेश के सहारे।
3. **गोपियाँ विरह की अग्नि में क्यों जलने लगीं–**
   (क) कृष्ण के वापस आने की बात सुनकर
   (ख) कृष्ण के द्वारा भेजे योग के संदेश को सुनकर
   (ग) उद्धव के वापस चले जाने से
   (घ) वर्षा ऋतु के आ जाने से।
4. **'मरजादा न लही' में किस मर्यादा के न रहने की बात कही गई है–**
   (क) धर्म की मर्यादा (ख) कर्म की मर्यादा
   (ग) वचन की मर्यादा (घ) मित्रता की मर्यादा।
5. **काव्यांश में कौन किससे कह रहा है–**
   (क) श्रीकृष्ण उद्धव से (ख) श्रीकृष्ण गोपियों से
   (ग) गोपियाँ श्रीकृष्ण से (घ) गोपियाँ उद्धव से।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (क) **3.** (ख) **4.** (ग) **5.** (घ)।

(3) हमारैं हरि हारिल की लकरी।
मन क्रम बचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जकरी।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।
सु तौ ब्याधि हमकौं लै आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ 'सूर' तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी।। ***(CBSE 2018)***

1. **'हारिल की लकरी' किसे कहा गया है–**
   (क) उद्धव को (ख) गोपियों को
   (ग) श्रीकृष्ण को (घ) कंस को।
2. **'नंद-नंदन' विशेषण किसके लिए प्रयुक्त हुआ है–**
   (क) श्रीकृष्ण के लिए (ख) गोपियों के लिए
   (ग) सुदामा के लिए (घ) नंदबाबा के लिए।

3. **गोपियाँ किसे व्याधि मानती हैं–**
(क) उद्धव को (ख) श्रीकृष्ण के वियोग को
(ग) उद्धव के योग ज्ञान को (घ) श्रीकृष्ण के प्रेम को।

4. **गोपियों को योग-साधना कैसी लगती है–**
(क) हारिल की लकड़ी की तरह
(ख) हारिल पक्षी के समान
(ग) जिसे कभी न देखा हो
(घ) कड़वी ककड़ी के समान।

5. **गोपियाँ योग का संदेश किनके लिए उपयुक्त समझती हैं–**
(क) जो श्रीकृष्ण से प्रेम नहीं करते
(ख) जिनका मन स्थिर नहीं है
(ग) जिनका मन स्थिर है
(घ) श्रीकृष्ण के लिए।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (ख)।

(4) हरि हैं राजनीति पढ़ि आए।
समुझी बात कहत मधुकर के, समाचार सब पाए।
इक अति चतुर हुते पहिलैं ही, अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए।
बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी, जोग-सँदेस पठाए।
ऊधौ भले लोग आगे के, पर हित डोलत धाए।
अब अपनै मन फेर पाइहैं, चलत जु हुते चुराए।
ते क्यौं अनीति करैं आपुन, जे और अनीति छुड़ाए।
राज धरम तौ यहै 'सूर', जो प्रजा न जाहिं सताए।। ***(CBSE 2020)***

1. **'हरि हैं राजनीति पढ़ि आए' – गोपियों ने ऐसा क्यों कहा–**
(क) श्रीकृष्ण राजा बन गए हैं
(ख) वे पहले से अधिक सरल और भोले हो गए हैं
(ग) वे राजनीतिज्ञों जैसे चतुर और निष्ठुर हो गए हैं
(घ) वे राजनीति पढ़कर घर आ गए हैं।

2. **गोपियों को श्रीकृष्ण की बुद्धि के विषय में कैसा लगा–**
(क) उनकी बुद्धि कम हो गई है
(ख) उनकी बुद्धि बढ़ गई है
(ग) उनकी बुद्धि कुटिल हो गई है
(घ) वे मंदबुद्धि हो गए हैं।

3. **गोपियों के अनुसार राजधर्म क्या है–**
(क) प्रजा पर अत्याचार करना (ख) प्रजा को दबाकर रखना
(ग) प्रजा को न सताना (घ) प्रजा से कर वसूल करना।

4. **'मधुकर' किसे कहा गया है–**
(क) उद्धव को (ख) श्रीकृष्ण को
(ग) गोपियों को (घ) साधु को।

5. **श्रीकृष्ण ने जाते समय गोपियों की कौन-सी वस्तु चुरा ली–**
(क) वस्त्र (ख) आभूषण
(ग) मन (घ) धन।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (ग)।

पाठ पर आधारित प्रश्न

निर्देश– *निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–*

1. **गोपियाँ उद्धव को भाग्यवान मानती हैं क्योंकि–** ***(CBSE 2023)***
(क) गोपियाँ श्रीकृष्ण के प्रेम में लिप्त हैं, फिर भी विरह झेल रही हैं
(ख) उद्धव श्रीकृष्ण के प्रेम-बंधन से मुक्त और अलिप्त होने के कारण विरह वेदना से भी मुक्त हैं
(ग) उद्धव को मथुरा में श्रीकृष्ण का सान्निध्य हर समय प्राप्त है
(घ) उद्धव ने बड़ी-बड़ी पोथियाँ पढ़कर ज्ञान अर्जित किया है।

2. **कमल पत्र जल में रहता है, लेकिन–**
(क) वह सूखा रहता है
(ख) वह बहुत गंदा होता है
(ग) वह जल का स्पर्श नहीं करता
(घ) वह बहुत चिकना होता है।

3. **गोपियों ने स्वयं को क्या कहा है–**
(क) अबला और भोली (ख) चतुर और चालाक
(ग) गुड़ जैसी मीठी (घ) तेल की चिकनी गागर।

4. **श्रीकृष्ण क्या पढ़ आए हैं–**
(क) धर्मशास्त्र (ख) दर्शनशास्त्र
(ग) राजनीतिशास्त्र (घ) प्रेमशास्त्र।

5. **सूरदास के पद 'अबला हम भोरी, गुर चाँटी ज्यौं पागी'–से गोपियाँ क्या कहना चाहती हैं?** ***(CBSE 2023)***
(क) हम भोली हैं, चींटी और गुड़ हैं
(ख) जैसे चींटी गुड़ ले जाते नहीं थकती, हम भी नहीं थकते
(ग) चींटी गुड़ पर अपने प्राण त्याग देती है
(घ) भोली गोपियाँ श्रीकृष्ण के प्रेम में डूबी हैं जैसे चींटी का गुड़ से प्रेम है।

6. **'प्रीति-नदी' में अलंकार है–**
(क) उपमा (ख) उत्प्रेक्षा
(ग) यमक (घ) रूपक।

7. **गोपियों की विवशता क्या है–**
(क) वे मथुरा नहीं जा सकतीं
(ख) उन्हें पढ़ना-लिखना नहीं आता
(ग) वे अपने मन की बात कृष्ण के अलावा किसी और को नहीं बता सकतीं
(घ) उन्हें योग का संदेश स्वीकार करना पड़ रहा है।

8. **सूरदास 'पद' पाठ में किस-किस के मध्य संवाद है–**
(क) श्रीकृष्ण और उद्धव (ख) श्रीकृष्ण और गोपियाँ
(ग) गोपियाँ और उद्धव (घ) ब्रजवासी और उद्धव।

9. **'हमारैं हरि हारिल की लकरी' में 'हारिल' कौन है–**
(क) हरि (ख) उद्धव
(ग) गोपियाँ (घ) पक्षी।

10. **गोपियों को योग-संदेश कैसा लगा–**
(क) सुखदायक (ख) कड़वी ककड़ी जैसा
(ग) बहुत मीठा (घ) बहुत ज्ञानप्रद।

11. **पाठ्यपुस्तक में दिए गए सूरदास के पदों में कौन-सा रस है–**
(क) करुण रस (ख) शांत रस
(ग) संयोग श्रृंगार रस (घ) वियोग श्रृंगार रस।

12. **गोपियों ने श्रीकृष्ण की बढ़ी हुई बुद्धि का अनुमान किससे लगाया–**
(क) उनके राजनीतिज्ञान से
(ख) उनके द्वारा भेजे गए योग-संदेश से
(ग) उनके द्वारा लिखे गए ग्रंथ से
(घ) उनके द्वारा दिए गए उपदेश से।

13. **गोपियों ने उद्धव को योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने के लिए कहा–**
(क) साधु-संतों को (ख) जिनके मन कठोर हैं
(ग) जिनके मन स्थिर हैं (घ) जिनके मन स्थिर नहीं हैं।

14. **गोपियों के वाक्चातुर्य की विशेषता नहीं है–**

(क) उनकी बातों में गहरा व्यंग्य छिपा है

(ख) उनके तर्क अकाट्य और सार्थक हैं

(ग) उनकी बातें लोक व्यवहार पर आधारित हैं

(घ) उनकी बातों में छल-कपट है।

15. **अनुपयुक्त कथन छाँटिए–**

(क) गोपियाँ योग को श्रेष्ठ मानती हैं

(ख) योग गोपियों के लिए कड़वी ककड़ी के समान है

(ग) योग उनके लिए एक व्याधि है

(घ) योग की आवश्यकता अस्थिर मन वालों को है।

16. **गोपियों के अनुसार किसने राजनीति की शिक्षा प्राप्त कर ली है–** ***(CBSE प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 2021)***

(क) कंस ने (ख) नंद ने

(ग) श्रीकृष्ण ने (घ) उद्धव ने।

17. **'सूरदास के पद' के आधार पर बताइए कि गोपियों ने व्यंग्य कसते हुए किसे भाग्यशाली कहा है–** ***(CBSE प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र 2021)***

(क) श्रीकृष्ण को (ख) उद्धव को

(ग) सूरदास को (घ) स्वयं को।

18. **गोपियाँ उद्धव के योग-संदेश को सुन योग को किसके लिए उपयुक्त बताती हैं–** ***(CBSE 2021 Term-1)***

(क) अत्यधिक चतुर और विद्वान के लिए

(ख) अस्थिर मन वाले लोगों के लिए

(ग) जिनकी मति फिर गई हो उनके लिए

(घ) संत, महात्मा और ज्ञानी मनुष्यों के लिए।

19. **गोपियों को 'कड़वी ककड़ी' के समान क्या प्रतीत हो रहा था–** ***(CBSE 2021 Term-1)***

(क) कृष्ण से वियोग (ख) कृष्ण की राजनीति

(ग) उद्धव की बातें (घ) योग का संदेश।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (घ) **6.** (घ) **7.** (ग) **8.** (ग) **9.** (ग) **10.** (ख) **11.** (घ) **12.** (ख) **13.** (घ) **14.** (घ) **15.** (क) **16.** (ग) **17.** (ख) **18.** (ख) **19.** (घ)।

भाग-2

वर्णनात्मक प्रश्न

काव्य-बोध परखने हेतु प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

प्रश्न 1 : गोपियों को योग कैसा लगता है और वस्तुतः इसकी आवश्यकता कैसे लोगों को है?

उत्तर : गोपियों को योग कड़वी ककड़ी जैसा लगता है। उन्हें यह एक ऐसी व्याधि लगती है, जो उन्होंने न तो कभी देखी, न सुनी और न अनुभव की। इसकी आवश्यकता उन्हें है, जिनके चित्त चंचल हैं।

प्रश्न 2 : कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने कैसे व्यक्त किया है? ***(CBSE SQP 2023-24)***

उत्तर : गोपियों ने अपने अनन्य प्रेम को निम्नलिखित प्रकार से व्यक्त किया है–

(i) वे कृष्ण के प्रेम में ऐसे लिप्त हैं, जैसे गुड़ में चींटी चिपक जाती है।

(ii) श्रीकृष्ण उनके लिए हारिल की लकड़ी हैं।

(iii) उन्होंने कृष्ण को मन, वचन, कर्म से अपना लिया है।

(iv) वे सोते-जागते, रात-दिन कृष्ण का ही नाम जपती हैं।

प्रश्न 3 : गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है?

उत्तर : गोपियाँ उद्धव को भाग्यवान इसलिए कहती हैं; क्योंकि वे श्रीकृष्ण के अत्यंत निकट रहकर भी उनके प्रेम में आसक्त नहीं हैं और एक वे (गोपियाँ) हैं कि दूर रहकर भी श्रीकृष्ण के प्रेम में विह्वल हैं। इसमें पास रहकर भी प्रेम न कर सकने पर व्यंग्य निहित है।

प्रश्न 4 : उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम कैसे किया?

उत्तर : गोपियों को यह विश्वास था कि श्रीकृष्ण शीघ्र ही लौट आएँगे, परंतु श्रीकृष्ण ने उलटा उद्धव के माध्यम से योग का संदेश भिजवा दिया। इस संदेश ने आग में घी का काम किया और उनकी विरहाग्नि और अधिक प्रज्वलित हो उठी। गोपियाँ उद्धव से कहने लगीं कि हमारे साहस की मर्यादा अब समाप्त हो गई है, इस विरह दुःख को सहने का साहस अब हममें (गोपियों में) नहीं रहा है।

प्रश्न 5 : गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही?

उत्तर : गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा ऐसे लोगों को देने के लिए कहा है, जिनके मन चंचल हैं; क्योंकि योग मन को स्थिर करने का साधन है। गोपियों का मन कृष्ण-प्रेम में रम चुका है; अतः उन्हें अब योग की आवश्यकता नहीं है।

प्रश्न 6 : 'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है? ***(CBSE 2016)***

उत्तर : यहाँ वचन की मर्यादा न रहने की बात की जा रही है। हमारे समाज में वचन की बहुत मर्यादा रही है। इसके लिए लोगों ने प्राण भी दे दिए हैं। कृष्ण ने गोपियों को वापस आने का वचन दिया था, जिसके सहारे वे धैर्य धारण किए हुए थीं। कृष्ण ने वापस न आकर वचन की मर्यादा को तोड़ दिया है। इसी कारण अब गोपियों का धैर्य भी टूट रहा है।

प्रश्न 7 : गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं?

उत्तर : गोपियों ने निम्नलिखित उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं–

(i) उद्धव, तुम बड़भागी हो, जो कृष्ण के प्रेम-बंधन में नहीं बँधे हो।

(ii) गोपियों ने उद्धव को कमल-पत्र के समान बताया, जो जल में रहकर भी जल का स्पर्श नहीं करता।

(iii) उन्होंने उद्धव को तेल की गागर अर्थात् चिकना घड़ा कहकर उसे उलाहना दिया।

(iv) उद्धव द्वारा दिए योग के संदेश को गोपियों ने कड़वी ककड़ी और बीमारी कहकर उलाहना दिया।

प्रश्न 8 : गोपियों ने उद्धव की तुलना किससे की और क्यों?

उत्तर : गोपियों ने उद्धव की तुलना कमल-पत्र और तेल की चिकनी गागर से की। जिस प्रकार कमल-पत्र जल में रहकर भी जल का स्पर्श नहीं करता और जिस प्रकार तेल की चिकनी गागर पर जल की एक बूँद भी नहीं ठहरती; उसी प्रकार उद्धव श्रीकृष्ण के पास रहकर भी उनके प्रेम और रूप-सौंदर्य के प्रभाव से अछूता है।

प्रश्न 9 : सूर के पदों के आधार पर गोपियों का योग के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : गोपियों का योग के प्रति निम्नलिखित दृष्टिकोण है–

(i) योग उनकी दृष्टि में कड़वी ककड़ी के समान अरुचिकर और नीरस है।

(ii) योग एक ऐसी व्याधि है, जो उन्होंने न तो देखी, न सुनी और न कभी अनुभव की।

(iii) गोपियों के अनुसार योग की आवश्यकता उन्हें है, जिनके मन चंचल होते हैं।

प्रश्न 10 : 'जागत-सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जकरी।' इस पंक्ति द्वारा गोपियों की किस मनःस्थिति का वर्णन किया गया है?

उत्तर: 'जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जकरी'– इस पंक्ति में सूरदास जी ने श्रीकृष्ण के प्रेम में अनन्य भाव से अनुरक्त गोपियों की दीवानों जैसी मनःस्थिति का वर्णन किया है। वे श्रीकृष्ण के प्रेम में इस प्रकार डूबी हुई हैं कि दिन-रात, सोते-जागते, यहाँ तक कि स्वप्न में भी श्री कृष्ण का नाम ही रटती रहती हैं। वे श्रीकृष्ण को मन, कर्म और वचन से अपने हृदय में बसाए हुए हैं। श्रीकृष्ण के बिना उनका जीवन अब अधूरा है। वास्तव में इस पंक्ति में गोपियों के एकनिष्ठ प्रेम की अभिव्यक्ति हुई है। यह प्रेम की दीवानगी है।

प्रश्न 11 : गोपियों के अनुसार राजधर्म क्या होना चाहिए? *(CBSE 2015)*

उत्तर: गोपियों के अनुसार राजा का धर्म यह होना चाहिए कि वह अपनी प्रजा को कभी न सताए, उसकी रक्षा करे और उसे दिए हुए वचन का पालन करे। प्रजा को अनीति से बचाना भी राजधर्म है।

प्रश्न 12 : गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन-से परिवर्तन दिखाई दिए, जिनके कारण वे अपना मन वापस लेने की बात कहती हैं?

उत्तर: गोपियों को श्रीकृष्ण में निम्नलिखित परिवर्तन दिखाई दिए हैं–

(i) पहले वे सरल हृदय और प्रेमी थे, अब कुटिल राजनीतिज्ञ बन गए हैं।

(ii) पहले वे गोपियों को प्रेम का पाठ पढ़ाते थे, अब उन्हें योग का संदेश भेज रहे हैं।

(iii) पहले वे दूसरों को अन्याय से बचाते थे, अब स्वयं भोली-भाली गोपियों पर अन्याय कर रहे हैं।

प्रश्न 13 : गोपियों ने अपने वाक्‌चातुर्य के आधार पर ज्ञानी उद्धव को परास्त कर दिया, उनके वाक्‌चातुर्य की विशेषताएँ लिखिए। *(CBSE 2017)*

उत्तर: गोपियों के वाक्‌चातुर्य की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं–

(i) गोपियों की बातों में गहरा व्यंग्य छिपा है।

(ii) वे अपनी बातों को उदाहरण देकर प्रस्तुत कर रही हैं।

(iii) उनकी बातें लोक-व्यवहार पर आधारित हैं।

(iv) गोपियों की बातों में उनके हृदय की सरलता और कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम झलकता है।

(v) उनके तर्क अकाट्य और बहुत ही सार्थक हैं।

प्रश्न 14 : गोपियों को ऐसा क्यों लगता है कि कृष्ण की बुद्धि अब और बढ़ गई है? *(CBSE 2016)*

उत्तर: श्रीकृष्ण की बुद्धि अब और बढ़ गई है गोपियों को ऐसा इसलिए लगता है; क्योंकि उन्होंने उनसे अपना पीछा छुड़ाने के लिए उद्धव के हाथों उनके लिए योग का संदेश भिजवाया है। अन्यथा कृष्ण जैसा सहृदयी व्यक्ति ऐसा संदेश नहीं भेजता। राजनीति सीखने के कारण उनकी बुद्धि में वृद्धि हो गई है, जिस कारण उनके स्वभाव में अब प्रेमभाव के स्थान पर कुटिलता का आधिक्य हो गया है।

प्रश्न 15 : सूर के पद 'हरि हैं राजनीति पढ़ि आए' का मूल स्वर व्यंग्य है। स्पष्ट कीजिए। *(CBSE 2017)*

उत्तर: सूरदास जी के इस पद का प्रत्येक शब्द व्यंग्य से भरा है। 'हरि हैं राजनीति पढ़ि आए' पंक्ति में गोपियों द्वारा कृष्ण पर तीखा व्यंग्य किया गया है। 'समाचार सब पाए' कहकर इस व्यंग्य को और अधिक तीखा कर दिया गया है। वे साथ ही उद्धव को भी आड़े हाथों लेती हैं कि तुम तो पहले-से ही चतुर-चालाक थे, अब तो गुरु कृष्ण से राजनीति भी सीख ली है; अतः तुम्हारी बातें छल-कपट से भर गई हैं। 'अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए' 'बढ़ी बुद्धि जानी' और 'ऊधौ भले लोग आगे के' कहकर वे कृष्ण पर सीधे वार करने से भी नहीं चूकतीं। इस प्रकार पूरा 'पद' व्यंग्य से भरपूर है। वक्रोक्ति अलंकार का सहारा लेकर गोपियों ने वाक्‌चातुर्य का अनोखा उदाहरण दिया है।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

हमारैं हरि हारिल की लकरी।
मन क्रम बचन नंद-नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जकरी।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।
सु तौ ब्याधि हमकौं लै आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ 'सूर' तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी।।

1. 'हारिल की लकरी' किसे कहा गया है–

(क) उद्धव को (ख) गोपियों को
(ग) श्रीकृष्ण को (घ) कंस को।

2. 'नंद-नंदन' विशेषण किसके लिए प्रयुक्त हुआ है–

(क) श्रीकृष्ण के लिए (ख) गोपियों के लिए
(ग) सुदामा के लिए (घ) नंदबाबा के लिए।

3. गोपियाँ किसे व्याधि मानती हैं–

(क) उद्धव को (ख) श्रीकृष्ण के वियोग को
(ग) उद्धव के योग ज्ञान को (घ) श्रीकृष्ण के प्रेम को।

4. गोपियों को योग-साधना कैसी लगती है–

(क) हारिल की लकड़ी की तरह (ख) हारिल पक्षी के समान
(ग) जिसे कभी न देखा हो (घ) कड़वी ककड़ी के समान।

5. गोपियाँ योग का संदेश किनके लिए उपयुक्त समझती हैं–

(क) जो श्रीकृष्ण से प्रेम नहीं करते (ख) जिनका मन स्थिर नहीं है
(ग) जिनका मन स्थिर है (घ) श्रीकृष्ण के लिए।

निर्देश–निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

6. गोपियों ने उद्धव को बड़भागी क्यों कहा–

(क) वह बहुत भाग्यशाली है
(ख) वह श्रीकृष्ण का मित्र है
(ग) उसके मन में किसी के प्रति अनुराग नहीं है
(घ) उसे मथुरा का राज्य मिल गया है।

7. गोपियों पर योग के संदेशों का क्या प्रभाव पड़ा–

(क) वे विरह की अग्नि में जल उठीं
(ख) वे प्रसन्न हो गईं
(ग) उन्हें ब्रह्मज्ञान प्राप्त हो गया
(घ) वे पागल हो गईं।

8. 'सूरदास के पद' के आधार पर बताइए कि गोपियों ने व्यंग्य कसते हुए किसे भाग्यशाली कहा है–

(क) श्रीकृष्ण को (ख) उद्धव को

(ग) सूरदास को (घ) स्वयं को।

निर्देश–*निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए–*

9. गोपियों को योग कैसा लगता है और वस्तुतः इसकी आवश्यकता कैसे लोगों को है?

10. उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम कैसे किया?

11. गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं?

12. सूर के पद 'हरि हैं राजनीति पढ़ि आए' का मूल स्वर व्यंग्य है। स्पष्ट कीजिए।